प्रश्न :- कहानी कला की दृष्टि से उसने कहा था शीर्षक कहानी की समीक्षा कीजिए।

उत्तर :- प्रस्तुत कहानी सन १९१५ में सर्वप्रथम प्रकाशित हुई। चंद्रधरशर्मा गुलेरी उस युग के कहानीकार हैं। जब हिन्दी कथा साहित्य का प्रारम्भ ही हुआ था। उसी समय प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी 'पंच परमेश्वर' (प्रकाशन १९१६) लिखी गई थी। जयशंकर प्रसाद की कहानी 'ग्राम', राजाराधिका रमण प्रसाद सिंह की कहानी 'कानों में कंगना' आदि इसी काल की अमर कहानियाँ हैं। इन आठ दशकों में हिन्दी कथा साहित्य में हजारों कहानियाँ लिखी गई। कितने आन्दोलन हुए - नई कहानी, साठोत्तरी कहानी, सहज कहानी, समानान्तर कहानी आदि तथापि गुलेरी जी की उक्त कहानी आज भी भाव और शिल्प दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। सच तो यह है कि गुलेरी जी ने सिर्फ एक कहानी लिखकर अपने को अमर कर लिया। उनकी दो और अमहत्वपूर्ण कहानियाँ मिलती हैं। कुछ आलोचकों की दृष्टि में उसने कहा था कहानी हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ कहानी है। कुछ लोग प्रेमचंद की 'कफन' कहानी को यह स्थान देते हैं। फिर भी 'उसने कहा था' अद्वितीय और अप्रतिम कहानी है।

इस कहानी में प्रथम विश्वयुद्ध के प्रसंग को उठाया गया है किन्तु मुख्यतः यह एक भाव प्रधान कहानी है। इसे चरित्र प्रधान कहानी की भी संज्ञा दी जा सकती है। कहानी का नायक लहना सिंह है। उसके प्रेम बलिदान को आद्यन्त ही मार्मिक ढंग से कहानीकार ने आलोच्य कहानी में प्रस्तुत किया है। निश्चय ही लहना सिंह का प्रेम बलिदान मर्मस्पर्शी है। करुण है कहानी में करुणा की प्रधानता है। कहानी के दुखान्त में भी संतोष है। प्रेमी लहना सिंह ने अपनी बचपन की प्रेमिका सूबेदारनी को दिये गए वचन के लिए अपनी जान की परवाह नहीं की। अमृतसर की एक दुकान में बालक लहना सिंह की मुलाकात रोज - रोज एक

Scanned with CamScanner

लड़की सी हो जाती है। धीरे-धीरे दोनों की मुलाकात पारस्परिक प्रेम में बदल जाती है। एक दिन साधु और देखकर लहना सिंह ने पूछा—"तेरी कुड़माई हो गई ?"

"धत, हाँ हो गई" कहकर लड़की भाग गई। यह दोनों की आखरी मुलाकात थी फिर, दोनों अपनी-अपनी दुनिया में खो गए। पूरे 25 वर्ष बीत गए। अब लहना सिंह नंबर 77 राइफल्स में जमादार हो गए हैं। उसे आठ वर्ष की कन्या का ध्यान ही नहीं रहा इसी बीच प्रथम महा विश्वयुद्ध प्रारंभ हो गया। अंग्रेजी सरकार की मदद के लिए लहना सिंह को फ्रांस जाने की बुलाहट आई। सूबेदार हजारा सिंह को भी जाना था। उन्होंने लहना सिंह को साथ चलने के लिए पत्र लिखा। वहाँ पहुँचने पर सूबेदार ने लहना सिंह को बताया कि सूबेदारनी उसे पहचानती है। लहना अंदर गया वहीं पुरानी पहचान सजीव हो गई। सूबेदारनी ने अपने पति हजारा सिंह और अपने एक मात्र पुत्र बोधा सिंह के प्राण की रक्षा के लिए लहना सिंह से आँचल पसार कर निवेदन किया। युद्ध-भूमि में लहना सिंह ने हजारा सिंह तथा बोधा सिंह के लिए निरंतर कष्ट सहा। जर्मनी के लपटन साहब की जासूसी से सारे मारे जाते, किन्तु प्रत्युत्पन्न मतित्व (Present of mind) वाला वीर लहना सिंह ने लपटन को मारा भी और सैनिकों की जान भी बचाई। विशेषकर सूबेदार और बोधा सिंह के प्राणों की रक्षा की तथा स्वयं बलिदान हो गया। मरते-मरते उसने अपना वादा पूरा किया जो उसने (अपनी प्रेमिका से) कहा था। अतः कहानी का शीर्षक 'उसने कहा था' सार्थक, सटीक, आकर्षक, कौतूहल (क्रौतूहल) पूर्ण है।

वस्तुतः इस कहानी में कथानक का महत्व नहीं है बल्कि विशेष आकर्षण इस कहानी के तकनीक (Tecnic) में है।

दृष्टावलोकन शैली में ऐसी कहानी लिखकर गुलेरी जी ने हिन्दी कहानी में नये शिल्प का बीज डाला था। ~~लहना सिंह~~ लहना सिंह की वीरता, धीरता, आज्ञाकारिता, सहनशीलता, अनुशासन तथा प्रेम बलिदान की यह अद्वितीय कहानी है। लहना सिंह के चरित्र का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से कहानी और अधिक स्वाभाविक हो गई है। बचपन का आकर्षण (प्रेम) सुद प्रेम में बदलकर कितना दिव्य हो जाता है वह इस कहानी में निहित है। सच तो यह है कि उसने कहा था सुद प्रेम की कहानी है। कहानीकार अमृतसर के बाजार, युद्ध भूमि, सैनिकों का व्यवहार, जासूसी का जाल, मृत्यु के क्षण इत्यादि के सजीव वर्णन के द्वारा देशकाल तथा वातावरण को जीवन्तता प्रदान की है। पात्रों के संवाद में बहुत गति है। नाटक की तरह संवाद के द्वारा गुलेरी जी ने दृश्य-विधान प्रस्तुत किया है। कहानी के प्रारंभ में बालक बालिका का संवाद और मरते हुए क्षणों में आत्मसंवाद के द्वारा यह कहानी अत्यधिक नाटकीय हो गई है कहानी की भाषा अनूठी है। गुलेरी जी ने मुहावरेदार भाषा का प्रयोग किया है। पात्रोचित भाषा के प्रयोग के कारण पंजाबी तथा अंग्रेजी भाषा के अधिक प्रयोग हुए हैं। कहीं-कहीं आंचलिक बोलचाल की भाषा में कहानी को और अधिक आकर्षक बना दिया है। इसी कारण कहानी की विश्वसनीयता बनी रहती है। आज भी इस कहानी की प्रासंगिकता है। हिन्दी कथा यात्रा में उसने कहा था कहानी एक प्रकाश स्तंभ की तरह है — मील की पत्थर की तरह है।

शुद्ध

शुद्ध व पवित्र